16-05-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुम्हारा लव एक बाप से है क्योंकि तुम्हें बेहद का वर्सा मिलता है, तुम प्यार से कहते हो - मेरा बाबा"

प्रश्नः- **किसी भी देहधारी मनुष्य के बोल की भेंट बाप से नहीं की जा सकती है - क्यों?**

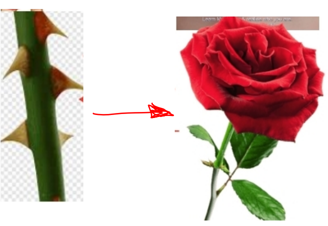

उत्तर:- क्योंकि बाप का एक-एक बोल महावाक्य है। जिन महावाक्यों को सुनने वाले महान अर्थात् पुरुषोत्तम बन जाते हैं। बाप के महावाक्य गुल-गुल अर्थात् फूल बना देते हैं। मनुष्य के बोल महावाक्य नहीं, उनसे तो और ही नीचे गिरते आये हैं।

गीत:- बदल जाए दुनिया...... Click

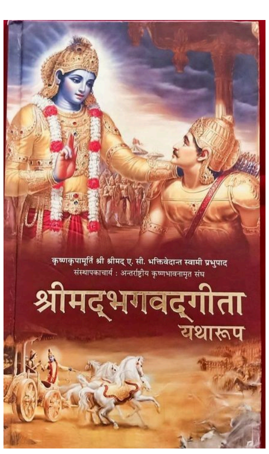

ओम् शान्ति। गीत की पहली लाइन में कुछ अर्थ है, बाकी सारा गीत कोई काम का नहीं है। जैसे गीता में भगवानुवाच मनमनाभव, मध्याजी भव यह अक्षर ठीक हैं। इसको कहा जाता है आटे में नमक। अब भगवान किसको कहा जाता है, यह

तो बच्चे अच्छी रीति जान गये हैं। भगवान शिवबाबा को कहा जाता है। शिवबाबा आकर शिवालय रचते हैं। आते कहाँ हैं? वेश्यालय में।

हाँ मेरे मीठे से मीठे बाबा...

खुद आकर कहते हैं - हे मीठे-मीठे लाडले, सिकीलधे रूहानी बच्चों, सुनती तो आत्मा है ना। जानते हो हम आत्मा अविनाशी हैं। यह देह विनाशी है। हम आत्मा अब अपने परमपिता परमात्मा से महावाक्य सुन रहे हैं। महावाक्य एक

ये सदैव याद रहे...

परमपिता परमात्मा के ही हैं जो महान् पुरुष पुरुषोत्तम बनाते हैं। बाकी जो भी महात्मायें गुरू आदि हैं, उनके कोई महावाक्य नहीं हैं। शिवोहम् जो कहते हैं वह भी सही वाक्य हैं नहीं। अभी तुम

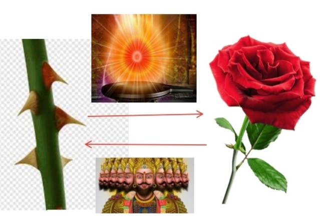

बाप से महावाक्य सुनकर गुल-गुल बनते हो। कांटे और फूल में कितना फ़र्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको कोई मनुष्य नहीं सुनाते हैं। इस (Brahma)

ये पक्का समझ लो...

पर शिवबाबा विराजमान हैं, वह भी आत्मा ही है, परन्तु उनको कहा जाता है परम आत्मा। अभी पतित आत्मायें कहती हैं - हे परम आत्मा आओ, आकर हमको पावन बनाओ। वह है ही परमपिता, परम बनाने वाला। तुम पुरुषोत्तम अर्थात् सब

16-05-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay (7)

मीठे बाबा, खा जाऊ आपको...

पुरुषों में उत्तम पुरुष बनते हो। वह हैं देवतायें। परमपिता अक्षर बहुत मीठा है। सर्वव्यापी कह देते हैं तो मीठापन आता नहीं। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो प्यार से अन्दर याद करते हैं, वह स्त्री पुरुष तो एक-दो को स्थूल में याद करते हैं। यह है आत्माओं को परमात्मा को याद करना, बहुत प्यार से। भक्ति मार्ग में इतना प्यार से पूजा नहीं कर सकते। वह लव नहीं रहता। जानते ही नहीं तो लव कैसे हो। अभी तुम बच्चों का बहुत लव है। आत्मा कहती है - 'मेरा बाबा'। आत्मायें भाई-भाई हैं ना। हर एक भाई कहते हैं बाबा ने हमको अपना परिचय दिया है। परन्तु वह लव नहीं कहा जाता है। जिससे कुछ मिलता है उसमें लव रहता है। बाप में बच्चों का लव रहता है क्योंकि बाप से वर्सा मिलता है। जितना जास्ती वर्सा, उतना बच्चे का जास्ती लव रहेगा। अगर बाप के पास कुछ भी प्रापर्टी है नहीं, दादे के पास है तो फिर बाप में इतना लव नहीं रहेगा। फिर दादे से लव हो जायेगा। समझेंगे इससे पैसा मिलेगा। अभी तो है बेहद का बाप। तुम बच्चे जानते हो हमको बाप

m.m.m..... Imp.

परमात्म प्यार में समा जाने का कोर्स...
Refer Last Page

Psychology

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पढ़ाते हैं। यह तो बहुत ही खुशी की बात है। भगवान हमारा बाप है, जिस रचता बाप को कोई भी नहीं जानते हैं। न जानने के कारण फिर अपने को बाप कह देते हैं।

Example

जैसे बच्चे से पूछो तुम्हारा बाप कौन? आखरीन कह देते हैं हम। अभी तुम बच्चे जानते हो उन सब बापों का बाप है जरूर, हमको जो अभी बेहद का बाप मिला है, उनका कोई बाप है नहीं। यह है ऊंच ते ऊंच बाप। तो बच्चों के अन्दर में खुशी रहनी चाहिए।

He is the Supreme

उन यात्राओं पर जाते हैं तो वहाँ इतनी खुशी नहीं रहेगी क्योंकि प्राप्ति कुछ है नहीं। सिर्फ दर्शन करने जाते हैं। मुफ्त में कितने धक्के खाते हैं। एक तो यह टिप्पड़ घिसी और दूसरा फिर पैसे की टिप्पड़ घिसती। पैसे बहुत खर्च करते, प्राप्ति कुछ नहीं।

Point to be Noted

भक्ति मार्ग में अगर आमदनी होती तो भारतवासी बहुत साहूकार हो जाते। यह मन्दिर आदि बनाने में करोड़ों रूपया खर्च करते हैं। तुम्हारा सोमनाथ का मन्दिर एक नहीं था। सब राजाओं के पास मन्दिर थे। तुमको कितने पैसे दिये थे - 5 हज़ार वर्ष पहले तुमको विश्व का मालिक बनाया था। एक बाप ही

ऐसे कहते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले तुमको राजयोग सिखाकर ऐसा बनाया था। अभी तुम क्या बन गये हो। बुद्धि में आना चाहिए ना। हम कितना ऊंच थे, पुनर्जन्म लेते-लेते एकदम पट आकर पड़े हैं। कौड़ी मिसल बन पड़े हैं। फिर अभी हम बाबा के पास जाते हैं। जो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह एक ही यात्रा है जबकि आत्माओं को बाप मिलते हैं, तो अन्दर में वह लव रहना चाहिए। तुम बच्चे जब यहाँ आते हो तो बुद्धि में रहना चाहिए कि हम उस बाप के पास जाते हैं, जिनसे हमको फिर से विश्व की बादशाही मिलती है। वह बाप हमको शिक्षा देते हैं - बच्चे, दैवी गुण धारण करो। सर्व शक्तिमान् पतित-पावन मुझ बाप को याद करो। मैं कल्प-कल्प आकर कहता हूँ कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। दिल में यह आना चाहिए हम बेहद के बाप के पास आये हैं। बाप कहते हैं मैं गुप्त हूँ। आत्मा कहती है मैं गुप्त हूँ। तुम समझते हो हम जाते हैं शिवबाबा के पास, ब्रह्मा दादा के पास। जो कम्बाइन्ड है उनसे हम मिलने जाते हैं, जिससे हम विश्व के मालिक

सागर की बाहों में मौज़ें है जितनी
हमको भी तुमसे मोहब्बत है उतनी
के ये बेक़रारी ना अब होगी कम
बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम
क़सम चाहे ले लो, ख़ुदा की क़सम

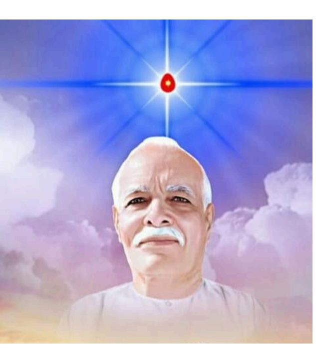

बनते हैं। अन्दर में कितनी बेहद खुशी होनी चाहिए। जब मधुबन में आने के लिए अपने घर से निकलते हो तो अन्दर में गद्गद् होना चाहिए। बाप हमको पढ़ाने के लिए आया है, हमको दैवीगुण धारण करने की युक्ति बताते हैं। घर से निकलते समय ही अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए। जैसे कन्या पति के साथ मिलती है तो जेवर आदि पहनती है तो मुखड़ा ही खिल जाता है। वह मुखड़ा खिलता है दु:ख पाने के लिए। तुम्हारा मुखड़ा खिलता है सदा सुख पाने के लिए। तो ऐसे बाप के पास आने समय कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी हमको बेहद का बाप मिला है। सतयुग में जायेंगे फिर डिग्री कम हो जायेगी। अभी तो तुम ब्राह्मण ईश्वरीय सन्तान हो। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। वह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, पढ़ाते हैं फिर पावन बनाकर साथ में भी ले जायेंगे। हम आत्मा अब इस छी-छी रावण राज्य से छूटते हैं। अन्दर में अथाह खुशी होनी चाहिए - जबकि बाप विश्व का मालिक बनाते हैं तो पढ़ाई कितनी अच्छी रीति पढ़नी चाहिए। स्टूडेन्ट अच्छी

Example

Swamaan

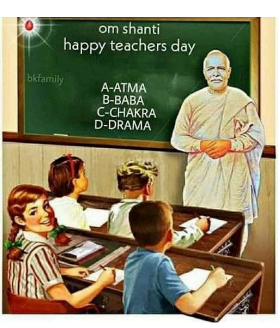

पुछो अपने आप से...

रीति पढ़ते हैं तो अच्छे मार्क्स से पास होते हैं। बच्चे कहते हैं - बाबा हम तो श्री नारायण बनेंगे।

यह है ही सत्य नारायण की कथा अर्थात् नर से नारायण बनने की कथा। वह झूठी कथायें जन्म-जन्मान्तर सुनते आये हो। अभी बाप से एक ही बार तुम सच्ची-सच्ची कथा सुनते हो। वह फिर भक्ति मार्ग में चला आता है। जैसे शिवबाबा ने जन्म लिया उसकी फिर वर्ष-वर्ष जयन्ती मनाते आये हैं। वह कब आया, क्या किया कुछ भी नहीं जानते। अच्छा, कृष्ण जयन्ती मनाते हैं, वह भी कब आया, कैसे आया, कुछ भी पता नहीं है। कहते हैं कंसपुरी में आता है, अब वह पतित दुनिया में कैसे जन्म लेगा! बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए - हम बेहद बाप के पास जाते हैं। अनुभव भी सुनाते हैं ना - हमको फलाने द्वारा तीर लगा, बाबा आये हैं.....! बस उस दिन से लेकर हम बाप को ही याद करते हैं।

But we know it, How Lucky & Great we all are...!

यह है तुम्हारी बड़े ते बड़े बाप के पास आने की

यात्रा। बाबा तो चैतन्य है, बच्चों के पास जाते भी हैं। वह हैं जड़ यात्रायें। यहाँ तो बाप चैतन्य है। जैसे हम आत्मा बोलती हैं, वैसे वह परमात्मा बाप भी बोलते हैं शरीर द्वारा। यह पढ़ाई है भविष्य 21 जन्म शरीर निर्वाह के लिए। वह है सिर्फ इस जन्म के लिए। अब कौन-सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए वा कौन-सा धन्धा करना चाहिए? बाप कहते हैं दोनों करो। सन्यासियों मिसल घरबार छोड़ जंगल में नहीं जाना है। यह तो प्रवृत्ति मार्ग है ना। दोनों के लिए पढ़ाई है। सब तो पढ़ेंगे भी नहीं। कोई अच्छा पढ़ेंगे, कोई कम। कोई को एकदम झट तीर लग जायेगा। कोई तो तवाई मिसल बोलते रहेंगे। कोई कहते हैं - हाँ, हम समझने की कोशिश करेंगे। कोई कहेंगे यह तो एकान्त में समझने की बातें हैं। बस, फिर गुम हो जायेंगे। कोई को ज्ञान का तीर लगा तो झट आकर समझेंगे। कोई फिर कहेंगे - हमको फुर्सत नहीं। तो समझो तीर लगा नहीं। देखो, बाबा को तीर लगा तो फट से छोड़ दिया ना। समझा बादशाही मिलती है, उनके आगे यह क्या है! हमको तो बाप से राजाई लेनी है। अभी बाप कहते

पुछो अपने आप से...

Attention..!

Experience of Sweet Brahma Baba

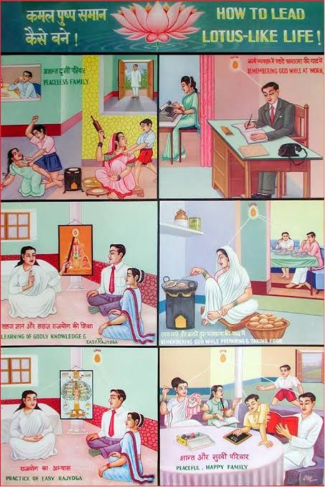

Mind very Well

हैं वह धंधा आदि भी करो सिर्फ एक हफ्ता यह अच्छी रीति समझो। गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। रचना की पालना भी करनी है। (सन्यासी) वह तो रचकर फिर भाग जाते हैं। बाप कहते हैं तुमने रचा है तो फिर अच्छी रीति सम्भालो। समझो स्त्री अथवा बच्चा तुम्हारा कहना मानते हैं तो सपूत हैं। नहीं समझते हैं तो कपूत हैं। सपूत और कपूत का पता पड़ जाता है ना। बाप कहते हैं तुम श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ बनेंगे। नहीं तो वर्सा मिल न सके। पवित्र बन, सपूत बच्चा बन नाम बाला करो। तीर लग गया फिर तो कहेंगे - बस, अभी तो हम सच्ची कमाई करेंगे। बाप आये हैं शिवालय में ले जाने। तो शिवालय में जाने लिए फिर लायक बनना है।

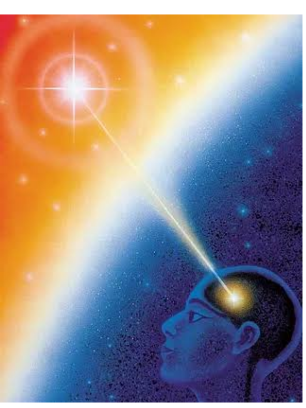

मेहनत है। बोलो, अब शिवबाबा को याद करो, मौत सामने खड़ा है। कल्याण तो उनका भी करना है ना। बोलो, अब याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम बच्चियों का फ़र्ज है पियर घर और ससुरघर का उद्धार करना जबकि तुम्हें बुलावा होता है तो तुम्हारा फ़र्ज है उनका कल्याण करना। रहमदिल बनना चाहिए। पतित तमोप्रधान मनुष्यों

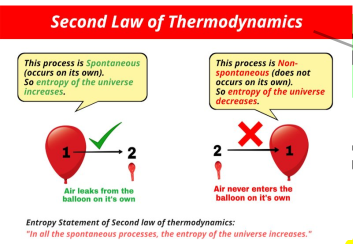

को सतोप्रधान बनने का रास्ता बताना है। तुम जानते हो हर चीज़ नई से पुरानी जरूर होती है। नर्क में सब पतित आत्मायें हैं, तब तो गंगा में स्नान कर पावन होने जाते हैं। m. Imp. (Realisation of current state) पहले तो समझें कि हम पतित हैं इसलिए पावन बनना है। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नष्ट हो जायेंगे। साधू-सन्त आदि जो भी हैं - सबको यह मेरा पैगाम दो कि बाप कहते हैं मुझे याद करो। इस योग अग्नि से अथवा याद की यात्रा से तुम्हारी खाद निकलती जायेगी। तुम पवित्र बन मेरे पास आ जायेंगे। मैं तुम सबको साथ ले जाऊंगा। जैसे बिच्छु होता है, चलता जाता है, जहाँ नर्म चीज़ देखता है तो डंक मार देता है। पत्थर को डंक मार क्या करेगा! तुम भी बाप का परिचय दो। यह भी बाप ने समझाया है - मेरे भगत कहाँ रहते हैं! शिव के मन्दिर में, कृष्ण के मन्दिर में, लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में। भगत मेरी भक्ति करते रहते हैं। हैं तो बच्चे ना। मेरे से राज्य लिया था, अब पूज्य से पुजारी बन गये हैं। देवताओं के भगत हैं ना। नम्बरवन है शिव की अव्यभिचारी भक्ति। फिर

Example

गिरते-गिरते अभी तो भूत पूजा करने लगे हैं। शिव के पुजारियों को समझाने में सहज होगा। यह सब आत्माओं का बाप शिवबाबा है। स्वर्ग का वर्सा देते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों। हम तुमको पैगाम देते हैं। अब बाप कहते हैं पतित-पावन, ज्ञान का सागर मैं हूँ। ज्ञान भी सुना रहा हूँ। पावन बनने के लिए योग भी सिखा रहा हूँ। ब्रह्मा तन से मैसेज़ दे रहा हूँ मुझे याद करो। अपने 84 जन्मों को याद करो। तुमको भगत मिलेंगे मन्दिरों में और फिर कुम्भ के मेले में। वहाँ तुम समझा सकते हो। पतित-पावन गंगा है या परमात्मा?

तो बच्चों को यह खुशी रहनी चाहिए कि हम किसके पास जाते हैं! है कितना साधारण। क्या बड़ाई दिखाये! शिवबाबा क्या करे जो बड़ा आदमी दिखाई पड़े? सन्यासी कपड़े तो पहन नहीं सकते। बाप कहते हैं मैं तो साधारण तन लेता हूँ। तुम ही राय दो कि मैं क्या करूँ? इस रथ को क्या श्रृंगारूँ?

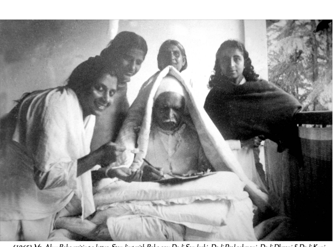

How Humble My Shiv baba is...!

How sweet my Shiv baba is...!

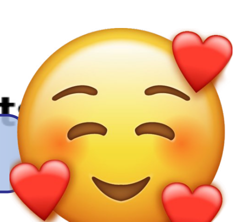

Point ... सेवा M.imp.

वह हुसेन का घोड़ा निकालते हैं, उनको श्रृंगारते हैं। यहाँ शिवबाबा का रथ फिर बैल बना दिया है। बैल के मस्तक में गोल-गोल शिव का चित्र दिखाते हैं। अब शिवबाबा बैल में कहाँ से आयेगा। भला मन्दिर में बैल क्यों रखा है? शंकर की सवारी कहते हैं। सूक्ष्मवतन में शंकर की सवारी होती है क्या? यह सब है भक्ति मार्ग जो ड्रामा में नूँध है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपने आपसे प्रतिज्ञा करनी है कि अभी हम सच्ची कमाई करेंगे। स्वयं को शिवालय में चलने के लायक बनायेंगे। सपूत बच्चा बनकर श्रीमत पर चलकर बाप का नाम बाला करेंगे।

2) रहमदिल बन तमोप्रधान मनुष्यों को सतोप्रधान बनाना है। सबका कल्याण करना है। मौत के पहले सबको बाप की याद दिलानी है।

वरदान:- हर मनुष्य आत्मा को अपने तीनों कालों का दर्शन कराने वाले दिव्य दर्पण भव

आप बच्चे अब ऐसा दिव्य दर्पण बनो

जिस दर्पण द्वारा हर मनुष्य आत्मा अपने तीनों कालों का दर्शन कर सके। उन्हें स्पष्ट दिखाई दे कि क्या था और अभी क्या हूँ, भविष्य में क्या बनना है।

जब जानेंगे अर्थात अनुभव करेंगे व देखेंगे कि अनेक जन्मों की प्यास व अनेक जन्मों की आशायें - मुक्ति में जाने की व स्वर्ग में जाने की, अभी पूर्ण होने वाली हैं

तो सहज ही बाप से वर्सा लेने के लिए आकर्षित होते हुए आयेंगे।

स्लोगन:- एक बल, एक भरोसा - इस पाठ को सदा पक्का रखो तो बीच भंवर से सहज निकल जायेंगे।

अव्यक्त इशारे - रूहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो

वारिस क्वालिटी प्रत्यक्ष तब होगी जब आप अपनी प्युरिटी की रॉयल्टी में रहेंगे।

कहाँ भी हद की आकर्षण में आंख न डूबे।

वारिस अर्थात् अधिकारी।

तो जो यहाँ सदा अधिकारी स्टेज पर रहते हैं, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहाँ भी अधिकारी बनते हैं।

15/05/2025 की मुरली के अंत मे "final Paper" बुक से जो अव्यक्त बापदादा के महावाक्य रखे थे उनको revise करने के लिए आप इस video को देख व सुन सकते है। इसको चलते-फिरते भी सुन सकते है।

Click

Revision is the key to inculcation/Reinforce in the mind...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

शिवबाबा से मीठी मीठी दृढ़ संकल्प से भरी हुई रूह रूहान....

Here is the wonderful song

Click

From the Movie: bajarangi bhaijaan

Haal-e-Dil ko sukoon chahiye
Poori ik aarzoo chahiye

(सतयुग से तुम्हारी जुदाई के कारन जो मेरे दिल की हालत है, उसे अब सुकून चाहिए - जो की तुम्हे पाकर या तुझमे समा कर ही मिल सकता है।
और कुछ वैसे ही द्वापर से लेकर के सिर्फ और सिर्फ तुम्हे पाने की आरजू थी वो पूरी होनी चाहिए - फिर चाहे कोई भी किंमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।)

Jaise pehle kabhi kuch bhi chaaha nahi
Waise hi kyun chahiye

(और अब जो तुम सामने हो, तो द्वापर से लेकर अब तक जो पहले कभी भी चाहा नहीं है। वैसा ही अर्थात तूम और सिर्फ तूम ही क्यों चाहिए...? एक संकल्प मात्र भी दूजा कुछ नहीं।)

Dil ko teri mojoodgi ka ehsaas yun chahiye

(इस पागल दिल को हर पल, हर क्षण तुम्हारी मेरे से combined मौजूदगी का एहसास यूँ चाहिए की जिससे हम दो, दो न रहकर एक हो कर रहे।)

Tu chahiye, tu chahiye
Shaam-o-subah tu chahiye
Tu chahiye.. Tu chahiye..
Har martabaa Tu chahiye

(तो बस अब मुझे शाम और सुबह, इन short हर एक पल, हर मर्तबा/हर दम तुम और सिर्फ तुम ही मुझे चाहिए।)

Jitni dafaa.. zidd ho meri
Utni dafaa.. haan, Tu chahiye

(हर एक कल्पमें, कलयुग के अंत में जब तुम्हे पाने की मेरी जिद हो तब तुम्हे अपना परमधाम छोड़कर मेरे लिए इस साकार श्रुष्टी में आना पड़े। - और यही तो रहष्य है तुम्हारे इस साकार श्रुष्टी में आने का, जिसे तुम drama के अनुसार तुम्हारा आना कहते हो।)

###$$$$%%%

Wo o...
Wo oo...

Koi aur dooja kyun mujhe
Na tere siva chahiye

(तो अब तुम्हारे सिवा क्यों मुझे अब कोई भी माना कोई भी दूजा संकल्प मात्र में भी नहीं चाहिए..?)

Har safar mein mujhe
Tu hi rehnuma chahiye

(अब हर एक सफ़र में, चाहे कितनी ही कठिनाइयों वाला रास्ता क्यों न हो। बस तुम ही मेरे रहनुमा/guide बनकर मेरे साथ रहो - इतना ही चाहिए।
इस दुनिया में किसी की भी मुझे जरुरत नहीं है और मेरे संकल्प में भी तुम्हारे सिवा और कोई नहीं चाहिए।)

Jeene ko bas mujhe
Tu hi meherbaan chahiye

(मेरे जीने के लिए सिर्फ एक तू ही सदा एवं सच्चा मेहरबान चाहिए।
बस, इतने में ही हो चुकी मेरी सूक्ष्म, स्थूल - सभी की सभी ख्वाहिशें पूरी।
नहीं चाहिए सतयुग का सर्वोच्च विश्व महाराजन का पद भी।)

Ho..
Seene mein agar tu dard hai
Na koi dawaa chahiye

(अगर मेरे सीने में दर्द उठता है और वो तुम्हारे कारण है तो उसे ठीक करने के लिए
कभी भी कोई भी दवाई मुझे नहीं चाहिए।
जिससे की उस दर्द को अर्थात तुमको कभी भी अपने से जुदा न होने दूँ।)

Tu lahu ki tarah
Ragon mein rawaan chahiye

(जैसे जिस्म में अगर खून न हो तो जिस्म रहेंगा ही नहीं।
ठीक उसी तरह मैं जिस्म हूँ और तुम लहुँ हो, जो हरदम मुज में समाए हुए रहने चाहियें।)

Anjaam jo chaahe mera ho
Aagaaz yun chahiye

(अंजाम चाहे कितना ही भयानक और दर्दनाक क्यों न हो, किन्तु आगाज़/शुरुआत तो
ऐसा ही चाहिए, जिसमे सदैव मैं तूझमें और तुम मुझमें समाये हुए combined हो।)

Tu chahiye, tu chahiye
Shaam-o-subah tu chahiye
Tu chahiye.. tu chahiye..
Har martabaa tu chahiye

Jitni dafaa.. zidd ho meri
Utni dafaa.. haan, tu chahiye

Wo o...
Wo oo...

Mere zakhmon ko teri chhuan chahiye

(यूं तो सतयुग से ही किंतु खास द्वापर से लेकर के इस संगम तक तुम साथ न होने के
कारन जो जख्म लगे है मुझपे, उन सभी जख्मों को सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी
छुअन(combined रूप से) चाहिए और वो भी सदा काल के लिए।)

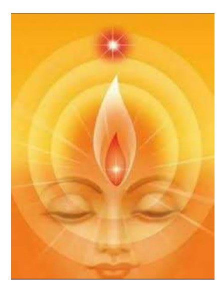

Meri shamma ko teri agan chahiye

(द्वापर से बुजी हुई मुज समां को सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी ही अगन चाहिए और again
सदा के लिए।)

Mere khwaab ke aashiyane mein tu chahiye

(मैंने जो अपने ख्वाबो का आशियाना/घर बनाया है उसमे सिर्फ और सिर्फ तुम और मैं
रहूं तीसरा न कोई।
तो बस इतना ही चाहिए, इससे आगे एक संकल्प भी नहीं।)

Main kholun jo aankhein sirhane bhi tu chahiye

(तो मेरे ऐसे सपनों के आशियाने में, तुम्हारी गोद में मेरा शिर हो और जब भी मैं आँखे
खोलू तो मेरे शिरहाने सिर्फ तुम्हारा चेहरा ही दिखाई दे।
बस और कुछ भी नहीं।
जो पाना था वो पा लिया।)

Wo ho...
Wo ho ho...

other songs to submerge
in the love of
Supreme

Click